# हिमाचल अभी अभी

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 10 अंक 33 कांगड़ा। शनिवार, 14 दिसंबर -20 दिसंबर, 2024 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 29 मार्गशीर्ष, विक्रमी संवत् 2081 कुल पृष्ठ 4 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/24-26

मुंह में कैंसर होने के ये हैं सबसे बड़े साइन -पढ़ें पेज 3

# भगवान श्रीकृष्ण

**श्रीकृष्ण के होने के कई पुरातात्विक प्रणाम मिलते हैं जिनके अनुसार, 97 साल पहले गताश्रम टीला में एक शिला मिली थी। इस शिला को श्रीकृष्ण के जन्म का पुरातत्व में पहला प्रमाण माना जाता है। यह शिला 1917 में मथुरा के विश्राम घाट में हुई एक खुदाई के दौरान मिली थी...**

श्रीकृष्ण से जुड़े कई रहस्य हैं जो आज भी दुनिया से छिपे हुए हैं। वहीं, उनसे जुड़े कुछ सबूत हैं जो आज भी धरती के कुछ स्थानों पर मौजूद हैं और इस बात को दर्शाते हैं कि श्रीकृष्ण की जिन लीलाओं का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है, धर्म ग्रंथों में मिलता है वह पूर्णत: सत्य है।

श्रीकृष्ण के होने के कई पुरातात्विक प्रणाम मिलते हैं जिनके अनुसार, 97 साल पहले गताश्रम टीला में एक शिला मिली थी। इस शिला को श्रीकृष्ण के जन्म का पुरातत्व में पहला प्रमाण माना जाता है। यह शिला 1917 में मथुरा के विश्राम घाट में हुई एक खुदाई के दौरान मिली थी।

श्रीकृष्ण ने गोकुल की रक्षा और इंद्र का घमंड दूर करने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपने हाथ की सबसे छोटी उंगली पर उठाया था। इस दूसरे शिला पट में उसी घटना का चित्रण किया गया है। यह शिला पट भी 2000 वर्ष से भी अधिक पुराना बताया जाता है।

श्री राधा कृष्ण के प्रेम दर्शाते वाले कई मंदिर ऐसे मिल जाएंगे जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि श्रीकृष्ण भी हैं, श्री राधा रानी भी हैं और श्री राधा कृष्ण के प्रेम की लीलाएं भी सर्वत: सत्य हैं। इन्हीं मे से एक है निधिवन। श्री कृष्ण का गीता उपदेश सत्य है इस बात का प्रमाण खुद भगवत गीता है जो घर-घर में लोगों द्वारा न सिर्फ पढ़ी जाती है, बल्कि वैज्ञानिकों के कई शोध का आधार भी गीता ही होती है।

श्रीकृष्ण ने मथुरा छोड़ने के बाद अपना गुजरात से 1000 किलोमीटर की दूरी पर स्थित समुद्र के किनारे द्वारिका नगरी का निर्माण किया था। इसी कारण से श्रीकृष्ण द्वारिकाधीश कहलाए। भारतीय नौ सेना और पुरातत्व विभाग ने अपनी समुद्र के अंदर गहरी खोज के दौरान इस बात के कई साक्ष्य दुनिया के सामने रखे की श्रीकृष्ण की नगरी द्वारिका आज भी समुद्र के भीतर मौजूद है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री